ISSN: 2349-4654
नाद-नर्तन जर्नल ऑफ डांस एण्ड म्यूज़िक
वर्ष : 8, सेमिनार विशेषांक, नवंबर 2019

परतन्त्र भारत का सुरीला आन्दोलन-सुराजी गीत (पूर्वांचल-उत्तर प्रदेश के सन्दर्भ में)

श्रीमती मिथिलेश तिवारी

शोधार्थी, तिलका माँझी, भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर (बिहार)

Paper recieved on : Sep 15, 2019, Sep 19, 2019, Accepted : Sep 23, 2019

सार-संक्षेप

भारत वर्ष के स्वतंत्रता की गौरवपूर्ण गाथा व उसके परिप्रेक्ष्य में सम्पूर्ण देशवासियों के संघर्ष का इतिहास समाज में अनेक माध्यमों से देखने-सुनने व पढ़ने को मिलता रहा है। लभग 100 वर्षों तक चलने वाला देश का यह व्यापक आन्दोलन छोटे-बड़े कई चरणों में स्वतंत्रता प्राप्ति तक चलता रहा। फलस्वरूप अन्त में (1920 से 1943) तक क्रान्ति का समग्र रूप ज्वालामुखी की भाँति धधक उठा, जिसकी लपटे देश में दूर-दूर तक पहुँची। इनकी तपन से पूर्वांचल (उत्तर प्रदेश) का भोजपुरी समाज विचलित हो उठा। विद्रोह के स्वर फूट पड़े। किन्तु क्रान्ति का यह बिगुल सुरीला था, जिसने स्वराज्य की भावना से परिपूर्ण 'सुराजी गीतों' का अद्भुत इतिहास रच डाला तत्कालीन पूर्वांचल समाज में ये 'सुराजी गीत' राष्ट्रीय जन-जागरण हेतु दूर संचार का सशक्त माध्यम बने। भविष्य में भी सम्पूर्ण विश्व में विस्तृत पुरबिया समाज की चेतना को झंकृत करने वाले ये 'सुराजी गीत' व इन में निहित पूर्वांचल की गौरव गाथा इस क्षेत्र विशेष व देश के स्वाधीनता आंदोलन के परिप्रेक्ष्य में धरोहर स्वरूप है। प्रस्तुत शोध-पत्र में यह जानने का प्रयास किया गया है कि किस प्रकार सुराजी गीतों ने स्वतंत्र भारत की नींव रखी। इससे यह भी सिद्ध करने का प्रयास किया गया है कि संगीत में बद्ध इन गीतों ने जैसे सोने पर सुहागे का काम किया। प्रस्तुत शोध-पत्र के माध्यमिक स्त्रोतों को आधार बनाया गया है। निष्कर्ष रूप में यह निर्दिष्ट किया है कि सुराजी गीत स्वतंत्रता आंदोलन का अभिन्न अंग रहे हैं। इन्होंने जन आन्दोलन की अगुवाई की है।

मुख्य शब्द : आन्दोलन, सुराजी, उत्तर प्रदेश, स्वराज्य, गाँधी

शोध-पत्र

स्वराज्य की चेतना का उद्‌भव

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के प्रथम युद्ध (1857) के पश्चात् वस्तुत: भारत में लोक चेतना प्रबुद्ध हो चुकी थी। किन्तु भारतवासियों को अपनी जाग्रत चेतना को परिणाम देने हेतु कई मंजिले पार करनी पड़ी। पहली मंजिल में उसे आत्म चेतना हुई और पुनरूत्थान का भाव जागा। दूसरी मंजिल में बंधन पाश से मुक्त होने के लिए लोक चेतना तड़प उठी और स्वतंत्रता प्राप्ति का साधन बन सकी ।

ब्रिटिश सरकार की भारतीयों के प्रति निरंकुश व शोषक प्रवृत्ति, प्रताड़नाएँ, दमन नीति, अधिक कर वसूली तथा गिरमिटिया मजदूरों के प्रति विश्वासघात जैसे अत्याचारों से देश की उदारवादी जनता भली-भाँति अंग्रेजों की कूटनीति का शिकार बनती गई। सन् 1857 की महाक्रान्ति के आक्रोश की आग अन्दर ही अन्दर सुलगती रही इस परिप्रेक्ष्य में एस.एल. नागौरी कहते हैं—"अपनी माँगों को ब्रिटिश सरकार के समक्ष प्रस्तुत करने के लिए भारत में कई संगठन बनें। इस क्रम में सबसे महत्त्वपूर्ण तथा स्थायी संगठन भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना सन् 1885 ई. में बम्बई में हुई। दादा भाई नैरोजी, सुरेन्द्र नाथ, बालगंगाधर तिलक, महात्मा गाँधी, लाल लाजपत राय आदि राष्ट्रीय नेताओं के नेतृत्व में कांग्रेस अपने प्रारम्भिक वर्षों तथा जनता में राष्ट्र प्रेम की भावना जागृत करती रही और ब्रिटिश शासन के शोषक स्वरूप का पर्दाफाश करती रही।"[1] उच्चवर्ग से मध्य वर्ग तक कांग्रेस की निरन्तर बढ़ती लोकप्रियता ब्रिटिश सरकार के आक्रोश का कारण बनी अग्रेजों के दमन नीति तथा 'फूट डालो और राज्य करो' की रणनीति से भारत में राष्ट्रीय जागरण की धाराएँ समय-समय पर विभाजित होती गई। उग्र राष्ट्रवादी धारा, क्रान्तिकारी आन्दोलन, हिन्दुस्तानी प्रजातंत्रिक संघ जैसे अनेक संगठनों के असहयोग आन्दोलनों की सक्रियता के कारण भारत की भयमुक्त जनता में अंग्रेज सरकार को ललकारने का उत्साह उत्पन्न हो गया। विदेशी हुकूमत की खुलेआम आलोचना साधारण बात हो चली थी।

"स्वराज्य हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है इसे मैं लेकर रहूँगा"[2] बालगंगाधर तिलक के इस अखण्ड विश्वास और आह्वान ने अंग्रेज

सरकार को हिलाकर रख दिया। इस सन्दर्भ में अनेक आन्दोलनों की ऐतिहासिक सफलता के बावजूद विभिन्न वैचारिक मतभेदों व अन्य कारणों से अनुकुल सफलता न मिले पाने से स्वाधीनता आंदोलनों की प्रगति का मार्ग अवरूद्ध होता गया।

आन्दोलनों की असफलता के मुख्य कारण

आंदोलनों की असफलता के मुख्य कारणों को निम्नलिखित बिंदुओं में वर्णित करते हैं—1. ''केन्द्रीय संगठन का अभाव, 2. आन्दोलन का मध्य वर्ग के शिक्षित नवयुवकों तक सीमित रह जाना, 3. ब्रिटिश सरकार की दमन नीति, रोलेट एक्ट के कठोर नियमों के अन्तर्गत बर्बरतापूर्वक व्यवहार से जनता का आतंकित होना, 4. अस्त्र-शस्त्र का अभाव, 5. सरकार के गुप्तचर विभाग की सजगता, 6. देश द्रोहियों के विश्वासघात आदि जैसे कारणों से स्वाधीनता आंदोलन असफल होते गए।''[4] अनेक आन्दोलनों के इस आरोह-अवरोह के क्रम में एक नए युग का प्रारंभ हुआ। जिसे गाँधी युग के रूप में ऐतिहासिक लोकप्रियता मिली।

गाँधी युग

सन् 1920 में गाँधी जी के स्वदेश आगमन के समय तक देश की राजनीतिक स्थिति बिल्कुल शिथिल हो चली थी। पण्डित नेहरू जी के शब्दों में—''गाँधी जी ताजी हवा के झोके की तरह आए, जिसने हमारे लिए खुली हवा में साँस लेना संभव बनाया। लगभग सन् 1919 से लेकर 1947 तक गाँधी जी राष्ट्रीय आन्दोलनों के कर्णधार बने रहे।''[4] सर्वप्रथम बिहार के चम्पारण सत्याग्रह (सन् 1917) से लेकर खेड़ा आन्दोलन (सन् 1917), अहमदाबाद मिल मजदूर आन्दोलन (सन् 1918), असहयोग आन्दोलन (सन् 1920), नमक आन्दोलन (सविनय अवज्ञा आन्दोलन) (सन् 1930), भारत छोड़ो आन्दोलन (सन् 1945) आदि जैसे अनेक छोटे-बड़े आन्दोलनों से देश में एक अद्भुत क्रान्ति का वातावरण बना। देश के एक कोने से दूसरे केने तक 'करो या मरो', 'इंकलाब जिन्दाबाद', 'अंग्रेजों भारत छोड़ो', 'वन्दे मातरम्', तथा 'तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूँगा' जैसे हजारो नारे गूँज उठे। गाँधी जी के अहसयोग आन्दोलन का आधार सदैव रचनात्मक गतिविधियाँ रही। विदेशी वस्त्रों का त्याग कर खादी वस्त्रों का धारण, स्वदेशी वस्तुओं का प्रयोग, चर्खा कातना, जुलाहों को रोजगार के साथ शिक्षण संस्थाओं से भारी मात्रा में देश भक्त कार्यकर्ताओं के सहयोग से एक नया विधान, नया विहान प्राप्त हुआ।

स्वतंत्रता संग्राम के रचनात्मक आन्दोलनों व गतिविधियों में कई गंभीर घटनाओं जैसे—जलियाँ वाला बाग हत्याकाण्ड (3 अप्रैल 1919), पंजाब तथा चौरी-चौरा काण्ड (5 फरवरी 1922) गोरखपुर के परिणाम स्वरूप गाँधी जी द्वारा असहयोग आन्दोलन को स्थगित कर दिया गया। किन्तु रचनात्मक गतिविधियों से देश में तब तक एक प्रभावशाली राजनीतिक जागृति उत्पन्न हो चली थी। तदनन्तर जिसने जन आन्दोलन का रूप धारण कर लिया। राष्ट्रीय स्तर पर व्याप्त यह आन्दोलन बुद्धिजीवियों के अतिरिक्त मध्यम वर्ग तथा दूर गाँवों की अशिक्षित जनता तक पहुँच चुका था। जनसाधारण की चेतना में तीव्र गति से ऊर्जा का संचार हो रहा था। इस सन्दर्भ में भावोद्रेकता के फलस्वरूप मनोभावों के अनुकूल गीतों का प्रस्फुटित हो जाना सम्भवत: मनुष्य की नैसर्गिक प्रवृत्ति कही जा सकती है। इसी क्रम में स्वाधीनता आंदोलन की लम्बी अवधि में अनकों बार राष्ट्रीयता से ओत-प्रोत अनेक गीत कदम-कदम बढ़ाए जा, मेरा रंग दे बसंती चोला, वह शक्ति हमें दो दयानिधे, सरफरोशी की तमन्ना, वन्दे मातरम्, सुजला सुफलाम आदि रचनाएँ देश में व्यापक स्तर पर लोक प्रिय होती रही। आज ये गीत अविस्मरणीय सिद्ध हो चुके हैं। हिन्दी भाषा भाषी के अतिरिक्त अनेक अन्य प्रान्तीय भाषाओं में भी स्वाधीनता आंदोलन के ओजपूर्ण गीतों ने यह प्रमाणित कर दिखाया कि समूचा देश और उसका कोना-कोना परतन्त्रता की बेड़ियाँ तोड़ने को प्रतिबद्ध हो चला था।

सुराजी गीतों का विकास

अंग्रेजों भारत छोड़ो (1945) का नारा बुलन्दी पर था। जिसकी गूंज सुदर पूर्वांचल उत्तर प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों तक पहुँची। उत्तर प्रदेश का पूर्वांचल क्षेत्र जहाँ शैक्षिक, आर्थिक व सामाजिक दृष्टिकोण से अपेक्षाकृत आज भी अत्यधिक विकास अपेक्षित हैं, वहाँ 73 वर्ष पूर्व की दशा अत्यन्त चिन्ताजनक तथा वर्तमान पीढ़ी के लिए कल्पनातीत है। स्वाधीनता आंदोलन के समय इस अंचल के अनेक गीतकारों व साहित्यकारों द्वारा आंचलिक भाषा-भोजपुरी में लिखे गए अनगिनत ओजस्वी गीतों के माध्यम से राष्ट्रीय चेतना का जन-जन में व्यापक संचार किया जाता रहा।

वस्तुत: भोजपुरी भाषा का क्षेत्र अत्यन्त व्यापक है। सुराजी गीतों का संबंध पूर्वांचल में उन क्षेत्रों से है जिन्होंने स्वाधीनता आंदोलन में विशेष भूमिका निभायी। ''इस दृष्टिकोण से सुराजी गीतों का इतिहास रचने वाले पूर्वी क्षेत्रों में गोरखपुर, चिल्लूपार, निचलौल, मझौली, तमकुही, बेतिया, पाण्डेयपार, खलीलाबाद, देवरिया, महराजगंज, बस्ती, बलिया, नरहपुर, पैना, उनवल, गोपालपुर, पड़रौना, डुमरी, बढ़यापार, आजमगढ़ सतासी राज्य आदि जैसे प्रमुख क्षेत्र रहे जिन्होंने स्वाधीनता आंदोलन में अग्रणी भूमिका निभायी''[5] तथा इन्हीं क्षेत्रों में भोजपुरी भाषा में गाए गए सुराजी गीतों का परचम लहराया, जिसने देश में स्वाधीनता आंदोलन के रचनात्मक पक्ष का सुन्दर और प्रभावशाली उदाहरण प्रस्तुत किया अंग्रेज सरकार के प्रति इस प्रकार का सुरीला विद्रोह सर्वथा विस्मयकारी था।''पूर्वांचल के गौरव गाथा स्वरूप आज भी इन क्षेत्रों का ऐतिहासिक महत्त्व है। प्रबुद्ध साहित्यकार श्री जगदीश नारायण श्रीवास्तव ने पूर्वी उत्तर प्रदेश को विचारों के सूर्योदय की धरती कहा, आगे श्री जगदीश जी के शब्दों में—''आखिर उत्तर प्रदेश के पूर्वी जिलों की बौद्धिक मिट्टी में वह कौन सी आध्यात्मिक आग है, जिसकी कोख फोड़कर यहाँ हर पीढी का विद्रोह जन्म लेता है।''[6]

भोजपुरी भाषा-भाषी वाले ये वही क्षेत्र विशेष रहे जहाँ से 1857 के विद्रोह में बलिया के मंगल पाण्डेय द्वारा प्रथम विद्रोह के स्वर फूटे। गिरामिटिया मजदूरों के रूप में सर्वाधिक इसी क्षेत्र के रणबाँकुरों ने देश

के प्रति अपनी आहुति दी। कई रियासतों का जब्त हो जाना समर्पित राजाओं व अनगिनत क्रान्तिकारियों को कालापानी की सजा तथा खुलेआम क्रान्तिवीरों को पेड़ों पर लटकाये जाने के ऐतिहासिक प्रमाणों से यह क्षेत्र विशेष आज भी अपनी गौरव गाथा को संजोए है।

इस प्रकार ''पूर्वांचल का भोजपुरी क्षेत्र अपनी राजनीतिक चेतना के लिए प्रसिद्ध है।''[7] भोजपुरी क्षेत्र का राजनीतिक यथार्थ और सही चित्रण यहाँ के कवियों रचनाकारों द्वारा उनके सहित्य व उनकी वाणी में व्यक्त हुआ है।

राष्ट्रीय चेतना को ललकारती प्रसिद्ध नारायण सिंह को रचना—

''जब सत्तावनि के रारि भइल बीरन के बीर पुकार भइल
बलिया का मंगल पाण्डेय के बलिवेदी से ललकार भइल
मंगल मस्ती में चूर चलल पहिला बागी मसहूर चलल
गोरनि का पलटनि का आगे, बलिया का बाँका सूर चलल''[8]

उपरोक्त पंक्तियाँ प्रसिद्ध नारायण सिंह जो के 'विद्रोंह' नामक शीर्षक से उद्धृत है। स्वाधीनता संग्राम के दौर की सभी ज्वलन्त घटनाओं से जुड़ी अनेक रचनाएँ क्षेत्रीय रचानाकारों द्वारा लिखी जाती रही। नमक आन्दोलन से जुड़ी बहुचर्चित रचना निम्नलिखित है।

लाला धनि धनि भइल नमकवा रे।
लाला सुन्दर सुराज के सिंगार नमकवा, नमकवा धनि धनि रे...

गाँधी जी द्वारा अनेक आन्दोलनों के सूत्रपात से देश की राजनीतिक स्थिति में एक हलचल सी हो चली थी। उसी क्रम में चरखा आन्दोलन से देश में वृहद रूप में रचनात्मक क्रान्ति उत्पन्न हो गई थी। घर घर चरखा चलने लगा। जिसमें महिलाओं की सहभागिता अत्यधिक रही। भोजपुरी समाज ने इस क्रान्ति को निम्नलिखित पंक्तियों में व्यक्त किया। तदनन्तर जिन्हें घर-घर गाया जाने लगा।

''गाँधी बाबा के चरखवा से प्यार।
हमार केहू का करिहे॥
अरे चरखा से लेबै हम सुराज, हमार केहू का कारिहे... ''[9]

इनकी अतिरिक्त लोकप्रियता की परिणति यह भी देखी जाती रही कि विवाह के अवसर पर लोकगीत विधा 'गारी' के रूप में चरखा गीत गाए जाने लगे।

''गाँधी बाबा दुलहा बने है, दुलहिन बनी सरकार, चरखवा चालू रहे।
वीर जवाहर बने सहबाला अर्विन बने नेवतार चरखवा चालू रहे॥''[10]

तत्कालीन प्रत्येक प्रमुख घटनाओं से प्रभावित होकर पूर्वी उत्तर प्रदेश के रचनाकार अपनी सच्ची संवेदनाएँ प्रकट करने में सदैव तत्पर रहते थे। रचनाकारों की तत्कालीन घटनाओं के प्रति सजगता और आधारित गीतों की लोकप्रियता ग्रामीण क्षेत्रों में दूर संचार का माध्यम बनते रहे। फलस्वरूप क्षेत्रीय अशिक्षित जनता भली-भाँति प्रमुख घटनाओं से अवगत होती रही। तत्कालीन अंग्रेज सरकार द्वारा क्रान्तिकारियों को कालापानी की सजा अत्यन्त हृदय विदारक थी। जिसे देशवासी सहर्ष स्वीकार करते रहे। इस भावना को सम्बोधित करती रचना।

''अरे रामा नागर नैया जाला काले पनियाँ रे हरी, सबकर नैया जाला कासी और बिसेसर रामा कि अरे रामा नागर नैया जाला काले पनिया रे हरी... ''[11]

उपरोक्त गीत में काला पानी की सजा प्राप्त 'नागर' नामक क्रान्तिकारी के परिवार व अन्य आत्मीयजनों की संवेदनाओं का विस्तापूर्वक वर्णन उल्लिखित है। दूसरी विशेषता इस गीत में 'रे हरी' का प्रयुक्त टेक गीत को 'कजरी' लोकगीत विधा की धुन में गाए जाने का संकेत है।

स्वतंत्रता संग्राम के दौरान पूर्वी क्षेत्र की ग्रामीण महिला के पुत्र की लालसा कुछ इस प्रकार देखने को मिलती है—

''एकठो लइका होते गोदिया में खेलउती ननदी
पाल पोसि के सयान करती फौउज में भरती करती
भारत माता के बेदी पर चढ़उती ननदी''[12]

विदेशी वस्त्रों के परित्याग हेतु उन्हें जलाकर होली, पर्व की भाँति देशवासियों की प्रसन्नता से भी भोजपुरी रचनाकार वंचित न रह सकें। निम्नलिखित गीत में ऐसे ही भाव दिखाई देते हैं—

''कि अरे लाला देखली विदेशी कपड़ा के होली,
लवर उठत असमान कि अरे लाला
दस पाँच गज कौन बतकही जरि गइले थान के थान''[13]

इन सुराजी गीतों की लोकप्रियता का मुख्य कारण यह भी रहा कि तत्कालीन घटनाओं के अतिरिक्त प्रायः सभी शीर्ष नेताओं, महात्मा गाँधी, जवाहर लाल, सुभाष चन्द्र बोस आदि तथा देश को समर्पित तत्कालीन शूरवीरों की गतिविधियों से अवगत होने का माध्यम ये गीत बने।

सुराजी गीतों की विशेषताएँ

1. सभी रचनाओं में पूर्वांचल के क्षेत्र विशेष भोजपुरी भाषा का प्रयोग।
2. तत्कालीन घटनाओं दशाओं तथा देश के नेताओं तथा क्रान्ति वीरों की यशोगाथा का वर्णन।
3. सांगीतिक दृष्टिकोण से ये गीत लोक गीतों की पारम्पारिक विधा सोहर, चैती, कजरी, पूर्वी उलारा, तथा शादी-विवाह में गाए जाने वाले संस्कार गीतों गारी, द्वारचार, विदाई आदि की धुन पर ही स्वरबद्ध कर के गाए गए।
4. लोक गीतों की पारम्परिक विधा के आधार स्वरूप इन गीतों की गेय पद्धति ग्रामीण क्षेत्रों के जन-समाज हेतु अत्यन्त सहज, ग्राह्य व लोकप्रिय प्रमाणित होती गई।
5. महिला प्रधान लोक गीतों की पारम्पारिक धुनें जैसे—सोहर, कजरी, विदाई गीत, गारी आदि पर आधारित सुराजी गीत गाँवों

में पर्दे में तथा एक सीमित परिवेश में रहने वाली असंख्य महिलाओं के आकर्षण का केन्द्र बनी। फलस्वरूप उन दिनों की महिलाओं की सुराजी टोली, ने अंग्रेज सरकार की नींद उड़ाने का इतिहास रच डाला।

6. पूर्वी लोक गीतों में प्रयुक्त सभी सांगीतिक विशेषताएँ रस, राग, लय-ताल, वाद्य तथा नृत्य आदि सभी सुराजी गीतों का आधार बनीं।
7. तत्कालीन सुराजी गीतों के रचनाकारों तथा गायक कलाकारों के अधिकतर नाम अज्ञात रहे।
8. देश की आपत्तिकालीन स्थिति में सुराजी गीतों का उद्‌भव होने के कारण दुर्भाग्यवश, संबंधित महिला व पुरुष प्रतिभागियों का कहीं कोई प्रमाणिक उल्लेख नहीं प्राप्त है।
9. सुराजी गीतों की पृष्ठभूमि में पूर्वांचल की जनता के प्रति ब्रिटिश सरकार के घोर अत्याचार का करुण इतिहास छिपा है। आर्थिक विपन्नता से जूझ रहे रचनाकारों व गीताकरों की कृतियों को जब्त कर उन्हें जेल में यातनाएँ तथा प्रिन्टिंग प्रेस आदि को नष्ट किए जाने की अनेक घटनाएँ आज इस क्षेत्र विशेष के इतिहास का विषय है।
10. गीतकारों द्वारा ही गीतों को स्वरबद्ध किया जाना अथवा गीत शैली निश्चित कर घर-घर पर्चे के रूप में गीत रचना को विस्तारित करना देश के प्रति उनके अटूट समर्पण व अदम्य साहस का अविस्मरणीय उदाहरण है।

सुराजी गीतों के अनगिनत अज्ञात रचनाकारों के काल-कवलित होने के बावजूद निम्नलिखित रचनाकारों के नाम उल्लेखनीय है। जिनके व्यक्तित्व व कृतित्व का यशोगान आज भी पूर्वांचल के इतिहास में गर्व का विषय है।

इन रचनाकारों में महेन्द्र मिसिर, रघुवीर नारायण सिंह, धरीक्षण मिश्र, मनोरंजन प्रसाद सिन्हा, कुँवर नारायण सिंह, चंचरीक, प्रसिद्ध नारायण सिंह, मोती बी.ए. आदि अनेक नाम उल्लिखित हैं। स्वराज्य की भावनाओं से परिपूर्ण ये गीत स्वतंत्रता संग्राम के उस दौर के छिन्न-भिन्न किन्तु इस क्षेत्र के बहुमूल्य धरोहर हैं।

सुराजी गीतों का सांगीतिक महत्त्व

स्वराज्य की भावना से उद्‌भूत भोजपुरी भाषा में रचे गए, विशेष काल-परिस्थिति में अपना परचम लहराने वाले सुराजी गीत पूर्वांचल के लोकगीतों की भाँति ही हैं। अनेक संवेदनाओं से परिपूर्ण इन गीतों का सांगीतिक पक्ष भी लोक गीतों की अन्य विधाओं की भाँति अत्यधिक प्रबल व प्रभावशाली है। प्रामाणिक तथ्यों के अनुकूल सुराजी गीतों के गायन का आधार भोजपुरी लोकगीत की लोकप्रिय विधाएँ—सोहर, चैता, मटकोड़, कजरी, नकटा, झूमर, विदाई गीत आदि रहे। समाज में सदैव देखे-सुने व गाए जाने के फलस्वरूप आज भी उपरोक्त लोकगीत विधाओं की तरह इनकी लोकप्रियता बनी हुई है। किन्तु विशेष काल परिस्थितियों में गाए, गए सुराजी गीत आज भी विशेष राष्ट्रीय पर्व, आयोजनों तथा देश की आपत्ति कालीन स्थिति की शोभा मात्र रह गए हैं। ये वो गीत है जिन्होंने संगीत के परिप्रेक्ष्य में भोजपुरी लोकगीत के रचना संसार को देशव्यापी मान्यता दिलायी तथा लोक गीत विधाओं की श्रृंखला में एक नवीन आयाम का सूत्रपात किया है।

पं. शारंगदेव द्वारा रचित महत्त्वपूर्ण संगीत ग्रन्थ 'संगीत रत्नाकर' द्वारा परिभाषित—''गीतं वाद्यं तथा नृत्यं त्रयं संगीत मुच्यते'' के अनुसार गायन, वादन तथा नृत्य ये तीनों ही 'संगीत' है। इस दृष्टिकोण से इस परिभाषा की सार्थकता का भोजपुरी सुराजी गीतों में भरपूर समन्वय परिलक्षित है।

लोक गीत विधाओं की धुन पर गाए जाने वाले सुराजी गीतों में प्रचुर मात्रा में रस-परिपाक होता रहा है। कारण-सुराजी गीतों की रसधारा सदैव लोक जीवन की रसधारा रही है। फलस्वरुप लोक में प्रचलित धुनों को व्यवस्थित व नियमबद्ध करके अनेक राग-रागनियों के आविष्कार के प्रमाण-उपलब्ध हैं। वस्तुत: लोक धुनों से ही भारतीय राग परम्परा की कल्पना जागृत होती आयी है। आज जो लोक धुनें हमें समाज में सुनी या देखी जाती हैं, उनमें बहुत से राग स्पष्ट देखे जा सकते हैं। इस तरह सारंग, खमाज, पीलू, काफी, बिलावल, आसावरी, झिझोटी आदि रागों के स्वर लोक गीतों में स्पष्ट देखे जा सकते हैं। सुराजी गीतों में भी लोक गीतों की इस विशेषता के उदाहरण कुछ गीतों की स्वरलिपि के माध्यम से निम्नलिखित है—

गीत की स्वरलिपि

ताल — चाचर या दीपचन्दी, मात्रा—14, मध्य लय

स्थाई — *लाला धनि-धनि भइल नमकवा रे*
धनि धनि भइल नमकवा रे

अन्तरा — *लाला सुन्दर सुराज के सिंगार नमकवा*
नमकवा धनि धनि रे
लाला दमरी अधेला के नमकवा रे, धनि धनि भइल नमकवा रे

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
										नि़	–	स	–
										ला	ऽ	ला	ऽ
×			2				0			3			
ग	ग	–	ग	–	ग	–	रे	ग	ग	रे	–	स	–
ध	नि़	ऽ	ध	ऽ	नि़	ऽ	भ	ई	ऽ	ल	ऽ	न	ऽ
×			2				0			3			
स	स	स	म	–	रे	स	नि़	–	–	ध़	–	प़	–
म	क	ऽ	वा	ऽ	ऽ	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×			2				0			3			
प़	प़	–	नि़	–	नि़	–	स	स	–	रे	–	प	–
ध	नि	ऽ	ध	ऽ	नी	ऽ	भ	ई	ऽ	ल	ऽ	न	ऽ
×			2				0			3			
ग	रे	–	स	–	नि़	–	स	–	–	नि़	–	स	–
म	क	ऽ	वा	ऽ	ऽ	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ला	ऽ	ला	ऽ
×			2				0			3			

अन्तरा—

										प	–	प	–
										ला	ऽ	ला	ऽ
×			2				0			3			
प	ध	–	प	नि	ध	प	प	–	प	प	–	प	–
सु	द	ऽ	र	ऽ	सु	ऽ	रा	ऽ	ज	के	ऽ	सिं	ऽ
×			2				0			3			
प	ध	प	प	नि	ध	प	प	प	प	प	–	प	ग
गा	ऽ	ऽ	र	ऽ	न	ऽ	म	क	ऽ	वा	ऽ	न	ऽ
×			2				0			3			
ग	ग	ग	म	–	म	–	रे	म	–	ध	ध	प	प
म	क	ऽ	वा	ऽ	ऽ	ऽ	ध	नि	ऽ	ध	ऽ	नि	ऽ
×			2				0			3			
ग	ग	ग	ग	ग	रे	ग	रे	–	स	नि़	नि़	स	स
रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ला	ऽ	ला	ऽ
×			2				0			3			
ग	ग	–	ग	–	ग	–	रे	ग	ग	रे	–	स	–
द	म	ऽ	री	ऽ	अ	ऽ	धे	ला	ऽ	के	ऽ	न	ऽ
×			2				0			3			
स	स	–	म	–	रे	स	नि़	–	–	ध़	–	प़	–
म	क	ऽ	वा	ऽ	ऽ	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×			2				0			3			

धनि-धनि भइल....स्थाई की भाँति

गीत की अन्य पंक्तियाँ भी अन्तरे की धुन पर गायी जाएँगी। यह धुन राग 'पीलू' पर आधारित है जो कि लोक गीतों में अत्यधिक प्रयोग होता रहा है।

गीत की स्वरलिपि

ताल — कँहरवा, मात्रा-8

स्थाई — *अब हम कातबि चरखा पिया, जनि जइह बिदेसवा हो।*

1	2	3	4	5	6	7	8	1	2	3	4	5	6	7	8
स	स	प	प	प	प	ध	प	म	प	मप	धप	ग	–	रे	स
अ	ब	ह	म	का	ऽ	त	बि	च	र	खऽ	ऽपि	या	ऽ	ज	नि
0				×				0				×			
रे	रे	म	म	रे	म	प	ध	प	–	–	–	म	–	ग	–
ज	ई	हा	बि	दे	स	वा	ऽ	हो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
0				×				0				×			

अन्तरा—

होइहें सुराज तबही सुख मिलिहे

कटि जइहें सबके कलेसवा पिया, जनि जइह...

प	प	प	ध	नि	नि	सं	सं	नि	ध	नि	नि	ध	ध	प	प
हो	ई	हें	सु	रा	ज	त	ब	ही	ऽ	सु	ख	मि	लि	हें	ऽ
0				×				0				×			

इस अन्तरे की आगे की पंक्ति 'कटि जइहें...' स्थाई की भाँति गायी जाएगी।

गीत की स्वर-लिपि

ताल — कँहरवा, मात्रा-8, (मध्य लय)

स्थाई — *अरे रामा भइले जगतवा से न्यारा*

सुबास चन्द प्यारा रे हरी...

1	2	3	4	5	6	7	8
रे	नि़	स	रे	ग ग	– म	– –	ग
अ	रे	रा	मा	भ इ	ऽ ले	ऽ ऽ	ज
×				0			
म	प	म	ग	रे	रे	ग	ग
ग	त	वा	से	न्या	ऽ	रा	सु
×				0			
रे	रे	स	नि़	रे	रे	ग	ग
बा	स	च	न्द	प्या	ऽ	रा	ऽ
×				0			
रे	स	ध	नि़	सा	–	स	–
रे	ऽ	ह	ऽ	री	ऽ	ऽ	ऽ
×				0			

अन्तरा—

जब तक रहि हें धरती गगनवाँ
बाबू सुबास जी के होहि हें नमवा
अरे रामा अँखिया के रहिले सितारा, सुबास चन्द...

1	2	3	4	5	6	7	8
						स स	रे रे
						ज ब	त क
ग	ग	म	–	ग	रे	स	रे
र	हि	हें	ऽ	ध	र	ती	ग
×				0			
ग	ग	म	–	म	–	म	ग
ग	न	वाँ	ऽ	ऽ	ऽ	बा	बू
×				0			
म	प प	प	म	ग	रे	रे	ग
सु	बा स	जी	के	हो	इ	हें	ऽ
×				0			
रे	स	स	–	–	–	–	स
न	म	वा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	कि
×				0			

अन्तरें की अगली पंक्ति, अरे रामा अँखिया के...

स्थाई की भाँति ही गायी जाएगी, यह धुन लोकगीत की 'कजरी' विधा पर आधारित है। ऐसी धुनों ने सुराजी गीतों को अत्यन्त लोकप्रिय बनाने में सहयोग किया।

राग 'आसावरी' के निकट यह लोकगीत जिसमें ग, ध और नि स्वरों का कोमल प्रयोग हुआ है, गीत के सौन्दर्य को सहज बनाने में समर्थ है। गीत की शेष पंक्तियों का गायन उपरोक्त अन्तरे की धुन पर होगा।

संगीत के सूक्ष्म तत्व

लोक गीत विधाओं के पारम्परिक आवरण में लिपटे सुराजी गीतों की गायन शैली में भी संगीत के सूक्ष्म तत्व—मींड्, खटका, मुर्की, काकू तथा गमक आदि का सुन्दर प्रयोग होता रहा। ये अद्‌भुत विषय है कि लोक गायक संगीत की इन बारीकियों से पूर्णतः अनभिज्ञ रहता है। राग, रस, छन्द, गायन के आधार-स्वर आदि जैसी सांगीतिक विशेषताएँ भोजपुरी लोकगीतों व लोक गायकों के लिए बेमानी कही जा सकती हैं। आज भोजपुरी गीतों की व्यावसायिकता में वृद्धि होने के कारण गायक, वादक तथा रिकार्डिस्ट आदि की सांगीतिक सूझ-बूझ अद्यतन हो चुकी है। बावजूद इसके लोक गीतों की सहज गायन शैली व गायक कलाकारों की मौलिकता आकाश में विचरण करने वाले स्वच्छन्द पक्षी की भाँति है और यही इनकी लोकप्रियता का मुख्य आकर्षण है तथा जिसके फलस्वरूप ये सुराजी गीतों के उद्‌भव और विकास का कारण बनें।

सुराजी गीतों के सांगीतिक सन्दर्भ में यह बिन्दु और भी महत्त्वपूर्ण हो जाता है क्योंकि लोक गीतों में सामान्य जन-जीवन की व्यथा-कथा, हर्षोल्लास व आशाओं के अभिव्यक्ति की अद्‌भुत क्षमता है। स्वतंत्रता आन्दोलन जब अपनी चरम सीमा पर था, पूर्वांचल के भोजपुरिया समाज में अपनी विद्रोहात्मक भावनाओं को गीतों के माध्यम से साझा करने के व दूर-संचार का माध्यम बनाने का ये अनोखा सुरीला आन्दोलन रहा। चरखा गीत, नमक आन्दोलन, विदेशी कपड़ों के विरोध का आन्दोलन, ब्रिटिश सरकार के अत्याचार के प्रति गुहार तथा लोकप्रिय नेताओं के समर्पण आदि से सम्बंधित संघर्षों के बीच लिखे गए व गाए जाने वाले स्वराज्य की भावनाओं से ओत-प्रोत सुराजी गीतों ने वर्षों से चली आ रही पूर्वांचल के लोक गायन शैली को एक नए कलेवर में शीर्षस्थ पीठिका पर स्थापित किया है। जिसकी कीर्ति व सुगन्ध आज विश्व स्तर पर देखी जा सकती है।

मॉरीशस, गुयाना, फिजी तथा सुरीनाम में आज भी प्रवासी भारतीयों के मानस पटल पर अपने पूर्वजों द्वारा गाए सुराजी गीतों की आधी-अधूरी पंक्तियाँ अंकित है। आवश्यकता है सुराजी गीतों को सर्वव्यापक व सर्वसुलभ बनाने की।

सुराजी गीतों में वादन पक्ष

'संगीत' के अनिवार्य पक्ष-वादन तथा वाद्यों की भी सुराजी गीतों की प्रस्तुति में महत्त्वपूर्ण भूमिका रहती है। विशेषत: सुराजी गीतों के सन्दर्भ में सदैव मध्य लय, द्रुत लय तथा अति द्रुत लय का ही प्रयोग किया गया। सुराजी गीतों को ओजपूर्ण रचनाओं के लिए सदैव अति द्रुत लय का प्रयोग किया गया, इसके लिए खेमटा, द्रुत कंहरवा के ताल प्रकारों का उपयोग किया गया। शेष लोक विधाओं कजरी, सोहर, माड़ो, झूमर, नकटा के धुनों पर आधारित सुराजी गीत मध्य लय में गाए जाते रहे हैं। इस प्रकार लगभग सभी मौलिक तालों—कंहरवा, दादरा, चाचर (दीपचन्दी) तथा खेमटा आदि का सुराजी गीतों की प्रस्तुति में प्रयोग दिखाई देता है। गीतों के अनुकूल मौलिक तालों के भिन्न-भिन्न प्रयोग लोक वादक कलाकार करते हुए देखे जाते हैं जो गीतों को अत्यन्त आकर्षक और सजीव बनाते हैं।

सुराजी गीतों में प्रयुक्त वाद्य

वाद्यों के बिना सुराजी गीतों की कल्पना शिथिल हो जाती है। कुछ मुख्य वाद्यों की—हारमोनियम, ढोलक, खजड़ी, हुड़का, नगाड़ा, ताशा, सिंहा तथा मंजीरा आदि गीतों को प्राणवान बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है।

सुराजी गीतों का नृत्य पक्ष

वाद्यों के साथ अपनी क्षेत्रीय भाषा भोजपुरी में गाए जाने वाले गीतों का अनूठा वातावरण सामान्य जन को नृत्य करने के लिए विवश कर देती है। प्रारम्भ से अन्त तक व्यक्ति गीतों की रसात्मकता से सराबोर हो उठता है। गीत-संगीत की ऐसी पराकाष्ठा कभी-कभी भाषा से परे देखी जाती है। अन्य भाषा-भाषी भी स्वयं को इससे वंचित नहीं रख पाते। इस क्रम में कई लोक नृत्यों के नाम निम्नलिखित हैं—फरियाहू, धोबियाहू, नकटा आदि। कलात्मकता की इस बिन्दु पर पं. शारंगदेव की संगीत की परिभाषा फलीभूत होती दिखाई देती है।

सुराजी गीत 'जन संघर्षों' के प्राचीनतम दस्तावेज हैं। जनता की व्यथा, रुचि कल्पना को अभिव्यक्त करने का सबसे पुराना माध्यम लोक गीत ही रहे हैं। आज भी त्रासदियों को झेलता, गँवई निरक्षर समाज अपनी पीड़ा को लोकगीतों में ही व्यक्त करता है। संघर्ष मय जीवन के दु:ख-दर्द को भुलाने में सुराजी इन गीतों ने मेहनतकश का भरपूर साथ निभाया है। गरीबों की जिजीविषा को बनाएँ रखने में सुराजी इन गीतों का बड़ा हाथ रहा है। यहाँ स्व के बजाए आम का ख्याल रखने की परम्परा रही है। इन गीतों ने कई बार संघर्षों की बुनियाद तैयार की है। अन्याय के विरुद्ध आम जनता को जगाया है। 'गाँधी युग' के रचनात्मक आंदोलन के सशक्त उदाहरण तथा तत्कालीन जन जागरण का माध्यम बने पूर्वांचल के भोजपुरी भाषा के ये सुराजी गीत व गाथाएँ उस दौर के ऐतिहासिक दस्तावेज है, जो नि:संदेह भविष्य में एक नया कीर्तिमान स्थापित करेंगे।

सन्दर्भ ग्रन्थ-सूची

1. नागोरी, एस.एल. व नागोरी, जीतेश, भारत का मुक्ति संग्राम, राज पब्लिशिंग हाउस, जयपुर, पृ. 31, 102, 125
2. उपाध्याय, विश्वामित्र, भारत के बढ़ते कदम, मुक्ति संघर्ष—नव विहान और राष्ट्र निर्माण की गौरवगाथा, सम्पादन-यशपाल जैन, चित्र कला संगम दिल्ली, पृ. 33
3. उपाध्याय, विश्वामित्र, लोक गीतों में क्रान्तिकारी चेतना, सूचना व प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, पृ. 37, 39
4. श्रीवास्तव, जगदीश नारायण, पूर्वी उत्तर प्रदेश का साहित्यिक परिदृश्य (भाग-1, भाग-2), अमर सत्य प्रकाशक, 109 ब्लाक बी प्रीत विहार, दिल्ली-110092, पृ. 30, 10, 323
5. द्विवेदी, आद्या प्रसाद, लोक साहित्य के सिद्धान्त व भोजपुरी लेखन, ग्रीन वर्ल्ड पब्लिकेशन (इण्डिया) प्रा.लि., महाजनी टोला, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, पृ. 112
6. उपाध्याय, विश्वामित्र, Opcit पृ. 39
7. अरोड़ा, मनोज, स्वतंत्रता संग्राम के प्रहरी, सनातन प्रकाशन, जनवरी-2018
8. शर्मा, महेश, स्वतंत्रता संग्राम के आन्दोलन, प्रभात पब्लिकेशन, 2013
9. श्रीवास्तव, संदीप, भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में क्रान्तिकारियों का योगदान, रिसर्च इण्डिया प्रेस
10. गोरखपुर की भोजपुरी काव्य भूमि, जागृति प्रकाशन, गोरखनाथ गोरखपुर उत्तर प्रदेश, पृ. 63
11. विश्वकर्मा, रामनरेश, पूर्वी लोक गीत, संगीत सदन प्रकाशन, संस्करण 2011
12. श्रीवास्तव, रवीन्द्र, गोरखपुरियत के बहाने, (जुगानी भाई, आकाशवाणी, गोरखपुर), नयन प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली
13. कुछ सुराजी गीत आकाशवाणी गोरखपुर के संगीत रूपक के सौजन्य से, गीत परिचय, पृ. 10, 13, 14
14. क्षेत्रीय बिरहा गायकों के माध्यम से गीतों की उपलब्धि